Indian Scholar
ISSN 2350-109X
www.indianscholar.co.in
An International Multidisciplinary Research e-Journal

प्रेमचंद का किसान गोदान के संदर्भ में

प्रतिभा पाण्डेय
सहायक प्राध्यापक हिन्दी
शा.पी.जी.कॉलेज दतिया, (म.प्र.)

प्रेमचंद्र कथा जगत के सम्राट माने जाते है उन्होंने अपने उपन्यासों में यथार्थ और आदर्श को अभिव्यक्ति दी है उन्होंने अपने उपन्यास और कहानी में जिस मार्मिक संवेदना को व्यक्त किया वह तत्कालीन समाज की परिस्थितियों, वातावरण परिवेश को अभिव्यक्त करती है। जिसमें एक वर्ग विपन्नता में जीवन जी रहा था। कफन कहानी के माध्यम से उन्होंने निर्धनता के और उस पूंजीवाद की ओर देखने को प्रयास किया है जिसमें एक व्यक्ति को भूख दिखाई देती है तो उसके लिए लोकाचार गौण हो जाते है। जो पारंपरिक होते है। क्योंकि पेट पहले है और समाज के रीति रिवाज बाद में है धनिकों के साथ यही संवेदना अति विलासता के कारण खत्म होती है। क्योंकि 'मैं' के कारण वे स्वयं से ऊपर नहीं उठ पाते है। निर्धन के कारण संवेदना भूख के साथ कम हो जाती है।

प्रेमचंद्र जब गोदान लिख रहे थे तो होरी के साथ उस समाज को जोड़कर के जीवन संघर्ष को चित्रित कर रहे थे जो कृषक जीवन भर मेहनत करता है परन्तु यथोचित परिणामों के न कारण मिल पाने के कारण दु:खी रहता है। महाजनी सम्यता की बेईमानियाँ, अत्याचार, अन्याय से निम्न वर्ग जीवन पर्यन्त जूझता रहता हैं, छटपटाता है लेकिन उससे बच नहीं पता। दो वर्गो के बीच तादात्म्य का तो प्रश्न ही नहीं उठता पर इतना तो हो सकता है कि एक वर्ग जो कमजोर है मेहनत करता है उसे 'रोटी' की सहजता प्राप्त हो सके क्योंकि उसकी सूखी रोटी में वह आनंद है जो शायद पंच सितारा होटल, छत्तीस तरह के व्यंजन में नहीं।

प्रेमचंद के होरी के जीवन के अंतिम समय की परिणति बड़ी हृदय विदारक होती है। प्रेमचंद के समस्या प्रधान उपन्यासों की श्रृंखला में सन् 1936 में प्रकाशित 'गोदान' निर्धनता, सामन्ती व्यवस्था, पूंजीवाद, कृषक जीवन पर आघृत है। 'गोदान' को कृषक जीवन का महाकाव्य माना जा सकता है। भारतीय किसान, समाज और धार्मिक नियमों में बंधा हुआ है। गोदान का पात्र होरी जीवन भर संघर्ष करता है परन्तु जीवन पर्यन्त धन की पूर्ति नहीं कर पाता। कृषक जिसकी मेहनत का फायदा तो सभी उठाते है परन्तु मौका पड़ने पर उसे मदद कोई नहीं करता। कृषक गाँव में पटवारी, महाजन, कारकुन आदि की बनाई व्यवस्थाओं से जूझता रहता है उनके जाल में फंसकर उबरने का कोई मौका नहीं मिल पाता। जीवन भर

कर्ज चुकाने का संकट बना ही रहता है 'होरी' को खेतों को खेतों के लिए बिटिया रूपा को बेचना पड़ता हैं। होरी ने जीवन भर मानव धर्म का पालन किया लेकिन इन्सान को बिकता देखकर महाजन, ठेकेदारो, सामन्तों की मानवता नहीं पिघलती मरते दम तक अथक परिश्रम और प्राण त्याग। ईमानदार, व्यावहारिक, सरल स्वभाव वाले होरी की परिणति का यह दुखद अंत हुआ। प्रेमचंद ने जिस यथार्थ का चित्रण सामाजिक बुराईयों में परिवर्तन के कारण किया था। वह केवल कानून बनाने से संभव नहीं है वरन उसके परिपालन से है प्रेमचन्द्र ने अपने कथा साहित्य में हिन्दू मुस्लिम एकता, अनमेल विवाह वैश्या सुधार, ग्राम्य सुधार आर्थिक शोषण, छुआछूत, विधवा विवाह, संयुक्त परिवार को समस्या, घूसखोरी, मुकदमेंवाजी, मद्य–निषेघ, कृषकों की दलिंतावस्था, राष्ट्रप्रेम, सत्याग्रह, आदि समस्याओं का यथार्थ अंकन किया है। प्रेमचन्द्र की सहानुभूति विशेष रूप से दलित शोषित वर्ग के साथ रही है। उन्हें बचपन से ही कृषक वर्ग की कठिनाइयों एवं विपत्ति को देखने को मिली स्वयं भी आर्थिक कठिनाइयाँ, जीवन की जटिलताओं को उन्होंने भोगा है।

जमीदारी पद्धति द्वारा शोषण के अन्तर्गत जमीदार, उसके कारिंदे आते है। महाजनी शोषण का चित्रण गोदान में हुआ हैं सन् 1917 में रूस में जो किसान मजदूर क्रांति को सफलता मिली थी। किसान–मजदूर के जीवन की विषमताओं को इस क्रांति से प्रभावित होने के कारण अधिक सार्थकता से प्रस्तुत किया गय। कथा साहित्य में उन्होंने यथार्थ और आदर्श दोनो को प्रस्तुत किया। युगीन समस्याओं को उन्होंने अपने साहित्य में अन्यन्त सजगता के साथ स्पष्ट किया। प्रेमचंद का गोदान जिस स्थिति का चित्रण करता है वह वीसवीं शताब्दी के चतुर्थ दर्शक से है। आज ग्राम्य जीवन और कृषक जीवन में परिवर्तन आ चुका हैं जिस कृषक जीवन की त्रासदी उन्होंने गोदान में वर्णित की वह वर्तमान जीवन की कथा का यथार्थ प्रस्तुत किया है। चाहे उपन्यास हो या कहानी उनका ध्यान प्रमुख रूप से शोषित, दलित, अभावग्रस्त वर्ग पर रहा है।

किसान दिन रात मेहनत करके भी लगान का बाकी नहीं चुका पाता है। लगान चुकाने के लिए उन्हें दूसरे के खेतों में मेहनत–मजदूरी करना पड़ती है। जमीदार और महाजन उनका शोषण करते है। कफन, 'पूस की रात' गोदान, मंत्र', पंच–परमेश्वर इन सबके यथार्थ अलग–अलग रूप में है। विवषताऐं निर्धनता, विपन्नता से संबंधित है। मजदूर हो या कृषक जीवन संघर्ष अधिकतर अर्थ से ही तो जुडें है भेद इतना है कि कृषक के पास यदि भूमि है तो वह उसके जीवन की अमूल्य निधि है परन्तु मजदूर तो प्रतिदिन कमायेगा तभी खायेगा। फिर प्रेमचंद का अपना बाल्यकाल भी निर्धनता में ही गुजरा है। पारिवारिक स्थितियाँ भी विषम ही

रहीं है उनके कथा साहित्य में कुछ समस्याओं ऐसी भी है जिनका संबंध आज के समय और समाज से भी है।

'कफन' में भूख मजबूर करती हैं तो सामाजिकता ही खत्म हो जाती है। 'पूस की रात' में करारा व्यंग्य हैं उन पर जो जानते ही नहीं होगे कि जाड़ा लगता कैसे है परन्तु बेचारे हल्कू और मुन्नी का पाई–पाई जोड़ा पैसा लगान में जब जाता है तो ठंड से बचाब के लिए कंबल ले ही नहीं पाते यह है कृषक वर्ग की विपन्नताओं की विवषता जिसमे कडकड़ाती ठंड में जब आग की गर्मी से वह सो जाता है तो नीलगाय खेत चौपट कर जाती है बेचारा हल्कू सोचता है अच्छा हुआ अब जाड़े में बाहर नहीं सोना पडेंगा जीवन के बहुत बडे अभाव से ग्रस्त कृषक संतुष्ट हो गया कि अब परेशान हीं होना पड़ेगा। गरीबी से प्रभावित आलसी घीसू–माधव मेहनत करना नहीं चाहते तो 'कफन ' के पैसे से शराब और अच्छा भोजन प्राप्त करते है। उनके लिए अच्छा भोजन महत्वपूर्ण है मरती हुई औरत का जीवन गौण हो गया। गोदान का 'होरी' जीवन पर्यन्त सज्जन बना रहना चाहता है कभी प्रतिकार नहीं करतां अपने घर में गाय रखने की साध बनी रही रह जाती है। एक गाय आती है तो वह भी मर जाती है अंत में उससे गोदान के लिए कहा जाता है कि जीवन पर्यन्त अभाव, गरीबी और मरने पर कर्मकाण्ड गोदान जिसके बिना मुक्ति नहीं। यह गोदान उपन्यास की परिणति। कृषक वर्ग अंधविश्वासी भी होता है कुछ नहीं होने पर भी मरने पर 'गोदान' आवश्यक बन जाता है धनिया के पास केबल बीस आने होते है उन्हीं वह 'गोदान' करा देती है। जीवन भर जिस गाय के लिए वह तरसता रहा उसी का दान उसके मरने के पश्चात् उसे यह अनुभूति हो ही नहीं पाई। वरना एक क्षणिक सुख की प्राप्ति तो ही जाती। 'होरी' का जीवन मेहनत मजदूरी में ही वीता और जीवन में नियति का पुरस्कार कृषक 'दैव' को स्वीकार कर लेते है।

वर्तमान में कृषक वर्षा पर निर्भर है लेकिन प्राचीन समय में कृषक देव्य को स्वीकार कर लेते है आज की तरह संसाधन, आर्थिक, शिक्षा, जीवन स्तर की दृष्टि से उतना विपन्न नहीं है। आज के कृषक के जागरूकता है। नई सोच है जिससे वह प्रगति भी कर रहा है। अभावों को ढोकर वह भाग्य को रो नहीं रहा है। बदलते विश्व के परिदृश्य में किसानों की सरकारी स्तर पर मदद की जाती है। वह अब गाँव से शहर की ओर है विज्ञान की प्रगति ने किसान को आर्थिक, सामाजिक मानसिक स्तर पर परिवर्तित किया है। अब तो पूरा विश्व ही एक गाँव बन गया है। लेकिन प्रेमचंद जिस वर्ग के लिए सचेष्ट रहे है वह आज भी प्रासंगिक है पूर्व के कृषक वर्ग के अपने अलग पक्ष है और आज के कृषक के अपने अलग पक्ष है।